लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या: 3; जुलाई-दिसंबर, 2021

मिचिङ समाज का परम्परागत बिहु उत्सव

मूल (असमीया) : **पल्लवी आरंधरा**
अनुवाद : **संजीव मंडल**

असम विभिन्न जातियों-जनजातियों की मिलनभूमि है। विभिन्न जाति-जनजातियों की बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत से भरपूर असम के जनमानस के लिए बिहु उत्सव हृदयस्पंदन की तरह है। कृषिजीवी समाज के लिए बिहु, विशेषत: *बहाग* बिहु नूतन कर्मोद्यम और जीवन-प्रेरणा-प्राप्ति का साधन है। जातीय-जीवन के परिचय के मुखर दर्पण-स्वरूप *बहाग* बिहु के आकर्षणीय और उल्लेखनीय वैशिष्ट्य हैं- ईश्वर-सेवा, गौ-सेवा, अतिथि-सेवा, पारस्परिक स्नेह-बंधन, दैनंदिन जीवन का स्वप्न-भरा कर्मचित्र, युवक-युवतियों की प्रणय-भावना आदि।

मिचिङ समाज के परम्परागत उत्सवों में बिहु उत्सव अत्यन्त प्राचीन है। मिचिङ समाज के जन्म के साथ-साथ मानो बिहु उत्सव का भी जन्म हुआ। बिहु के साथ मिचिङ समाज का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है। मिचिङ लोग *बहाग* बिहु को *बाअग बिउ* कहते हैं। फाल्गुन महीने के प्रथम बुधवार को मनाए जाने वाले कृषिकेन्द्रिक उत्सव *आलि आइ लृगांङ* के *गुमराग्-गुमराग्* ढोल की आवाज ही मिचिङ समाज में *बहाग* बिहु या *रङाली* बिहु की पूर्व-सूचना देती है।

फाल्गुन के खत्म होते ही चैत्र के पंद्रह-बीस दिन गुजरते ही मिचिङ गाँव के युवक-युवती, वृद्ध सभी मिलकर सफेद पोशाक धारण कर *हुँचरि* (एक प्रकार का गीत-नृत्य) गाकर वृत्ताकार नृत्य करके “रङाली माँ ओ, उतर आओ, करेला ओ, बेंगन ओ, बिहु के मौसम के दर्पण ओ” - यह गीत गाकर *बहाग* बिहु का स्वागत करते हैं। इस कार्य को ‘बिहु

उतारना' कहा जाता है। गौ-सेवा को समर्पित *गरु* बिहु के एक सप्ताह पहले ही गायों के गले की डालने वाली नयी रस्सियों की तैयारी शुरू हो जाती है। मिचिङ समाज में यह विश्वास प्रचलित है कि गाय-बैलों के गले में नयी रस्सी न बांधने से पूरा साल गाय-बैलों के लिए अच्छा नहीं गुजरता है।

गरु बिहु के दिन सुबह बहु-बेटियाँ चावल कूटती हैं। कोई तेल निकालती हैं। तेल निकालते वक्त वे गाती हैं-

> दिहिङर सुँति, दिचाङर सुँति
> बर बरकै ओलाबि ऐ
> (अर्थात् दिहिङ की धारा, दिचाङ की धारा
> अधिक अधिक निकलना ओइ)

पुरुष गाय-बैलों को नहला लेने के उपरान्त स्वयं नहा-धोकर नए कपड़े पहनते हैं। परिवार के मुखिया-स्वरूप माता-पिता के पैर छूते हैं। भक्त-भक्तिन घर-घर बिहु का दीया जलाकर *आपङ* (एक प्रकार की शराब) के नशे में भक्ति के गीत गाते हैं। मिचिङ समाज में *बिहुवान* (आदरसूचक दिया जानेवाला गमछा) देने की परम्परा नहीं है। उसके बदले *आपङ* या मांस-मछली देकर परिवार के ज्येष्ठजनों की सेवा की जाती है। उस दिन से प्रत्येक घर में *विउ चाकि* कहलाने वाले मांगलिक कार्य सम्पन्न करके मृत पूर्व-पुरुषों को बिहु के पकवानों में से एक भाग देकर पिण्ड दिया जाता है और पूरे साल गृहस्थ के साथ-साथ खेती की मंगलकामना करते हुए प्रार्थना की जाती है। महिलाएँ गाय-बैलों के लिए कूटे गए चावल, जिसे *पिठा गुरि* कहा जाता है, के साथ नमक मिलाकर *गरु पिताङ* तैयार करती हैं। शाम के समय गोशाला के द्वार के सामने गाय-बैलों को *पिठा* (एक प्रकार का पकवान) खिलाया जाता है और उसके बाद उनके गले में नयी रस्सी बाँधी जाती है। इस प्रकार *गरु* बिहु की समाप्ति होती है।

मिचिङ लोग *गरु* बिहु के बाद के बिहु को *तानि विउ* अर्थात् मनुष्य बिहु कहते हैं। उस दिन सुबह के समय ही गाँवों में बिहु प्रारम्भ हो जाता है। चारों तरफ ढोल-ताल की आवाज *ऐनि:तम* (एक लोकप्रिय मिचिङ लोकसंगीत) की मधुर सुर की प्रतिध्वनि,

सिक्कों की खनखनाहट आदि से मिचिङ गाँव का वातावरण मुखरित हो उठता है।

मिचिङ लोगों द्वारा मनाए जाने वाले *बहाग* बिहु से संबंधित *हुँचरि* (*उनचारि कगनाम*) बहुत मनोरंजक कार्यक्रम है। यह नृत्य-गीत का कार्यक्रम है। मिचिङ लोग *हुँचरि* गाने से पूर्व गृहस्थ के आँगन में पदार्पण करते ही "जय हरि बोल, जय राम बोल, गृहस्थ का कुशल मंगल हो, हे...हेइ हेइ हेइया हेइ..." – ऐसी मंगलसूचक जयध्वनि करते हैं और *हुँचरि* प्रारम्भ करते हैं।

मिचिङ लोगों द्वारा गाया जाने वाला प्रथम हुँचरि-गीत है-

राचति (हुचरि) ऐ गाङ (गाँव)
गाङ ऐ (गाँव ओए)
गाङबुरार (गाँव के मुखिया)
गरते (घर में) गाङ
उपरे बरकुन (ऊपर बारिश) तले
बुका (नीचे कीचड़) पानी
गाङबुरार गरते गाङ।

उल्लेखनीय है कि ये लोग गृहस्थ के मुखिया की पदवी या जीविका का नाम लेकर ही *हुँचरि* का पहला गीत गाते हैं। *हुँचरि* गाने वाले दलों को सम्भालने के लिए एक *डेका* (जवान) *बरा* (एक पदवी) और एक *तिरी* (स्त्री) *बरा* नियुक्त किए जाते हैं। परम्परागत तौर पर *डेका बरा* युवकों को और *तिरी बरा* युवतियों को संभालते हैं। *बरा* के अधीन *टेकेला*, *चाउदाङ* और *बारिक* पदवी के लोग अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ सम्भालते हैं। किसी के अनुचित कार्य करने पर उचित दण्ड देने के साथ ही जुर्माना भरने का नियम भी है। *हुँचरि* प्रारम्भ होने से लेकर खत्म होने के दिन तक *हुँचरि* दल के युवक-युवतियों को *बरा* लोगों के कठोर शासन के अधीन रहना पड़ता है। नियम भंग होने पर समाजच्युत होना पड़ता है। इसीलिए जितना सम्भव हो मिचिङ युवक-युवतियाँ बिहु में नियम नहीं तोड़ते हैं।

मिचिङ लोगों का *हुँचरि* गाकर नृत्य करने का नियम थोड़ा अलग है। *हुँचरि* कार्यक्रम में युवक-युवती दोनों भाग लेते हैं। युवक-युवतियाँ एक-दूसरे का हाथ पकड़कर वृत्ताकार घुम-घुमकर गीत गाते और नृत्य करते हैं। इस कार्य को *आछति* गाना कहा जाता है। *हुँचरि* के गीत और नृत्य के खत्म

होते ही ढोल बजाने वाले के ढोल में बज उठता है – "च: मान मान नाम" अर्थात् नर्तकी को नचाते रहने के लिए लम्बे समय तक बजाते रह सकने वाले इस ढोल पर आघात। उसके खत्म होते ही इतने दिनों से बिहु नाचते-गाते हुए इन युवक-युवतियों के गोपनीय तौर पर रखे हुए हृदय के भावों को प्रकाशित करने वाले मर्मस्पर्शी *ऐनि:तम* गीत गाने के कार्यक्रम का प्रारम्भ होता है। प्रिय के कंठ से मधुर *बिहुनाम* और *ऐनि:तम* सुनकर मिचिङ युवक-युवती थकते नहीं, नींद नहीं आती और वे भूख-प्यास सब भूल जाते हैं। नीचे क्रमशः एक बिहुगीत एवं एक ऐनि:तम के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं-

बिहुगीत :

यइ तयो कॅरपरा मयो कॅरपरा
बाटते चिनाकी हॅलौँ
बाटते चिनाकी पिरिती करिलौँ
चारिब नोवारा हॅलौँ।

(अर्थात्, ओए तुम भी कहाँ से मैं भी कहाँ से रास्ते में पहचान हुई रास्ते में पहचान प्रेम किया छोड़ भी नहीं सकता हूँ।)

ऐनि:तम :

रकप परक अ:लांका
दलृ: दौम दलांका
दलुङ आजन जनलांका
का:लृदाअम का:लांका

(यानी, मुर्गा पालना तभी खाने का मन हो तो खा सकोगे और गाँव में ही प्रेम करना तभी देखने का मन हो तो देख सकोगे।)

वैशाख के सात दिन बाद गाँव से *रङाली* माँ को विदा करने का नियम या बिहु खत्म करने की प्रथा मिचिङ समाज में प्राचीनकाल से प्रचलित है। बिहु खत्म करने के लिए गाँव के निचले हिस्से में स्रोतस्विनी नदी के किनारे बालू में एक सेमल का पेड़ रोपकर नीचे बालू से घड़ियाल की एक प्रतिमूर्ति बनाकर *पिठागुरि* और कोयले के चूर्ण से काला-सफेद रंग पोतकर बिहु को घड़ियाल की पीठ पर बाँधकर विदा किया जाता है। युवक-युवतियाँ अपनी एक-एक प्यारी चीज बिहु को उपहार के रूप में देकर विदा करते हैं। परंपरा के अनुसार उस सेमल के पेड़ पर रुमाल, गमछा, कंघी आदि देकर सुन्दर ढंग से सजाकर एवं पेड़ को चारों तरफ से घेर कर वृत्ताकार पाँच बार घुम-घुमकर नाचकर – "करेला ओ, बेंगन ओ, बिहु के मौसम में दर्पण लो" गीत गाया जाता है और ऐसे *बहागी* को विदाई दी जाती है। अंत में

किसी की तरफ न देखकर सभी दौड़-दौड़कर घर चले आते हैं। अब धीरे-धीरे मिचिङ बिहु की पूर्व-प्रचलित कुछेक परम्पराएँ लुप्त हो रही हैं। फिर भी मिचिङ समाज में बिहु उत्सव के इंद्रधनुषी रंग-रूप हमेशा इसी प्रकार विद्यमान रहेंगे। यह मिचिङ लोगों के दैनंदिन जीवन की विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक झाँकियों को प्रतिफलित करने वाला निज वैशिष्ट्यों से युक्त एक समृद्ध जातीय उत्सव है।

(प्रस्तुत लेख में समाविष्ट मिचिङ समाज में प्रचलित बहाग बिहु-विषयक तथ्य ज्यादातर मौखिक रूप में मिचिङ जन-समाज में परिव्याप्त हैं। अतः लेखक ने लोक-प्रचलित विश्वासों एवं मतों के आधार पर उक्त सामग्री का संकलन किया है।)

संपर्क-सूत्र:
अनुवादक
शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय